बुन्देली साहित्य

महाकवि ईसुरी

(बुन्देली काव्य)

डॉ. राम नारायण शर्मा

बुन्देली साहित्य

श्री हरिविष्णु अवस्थी जी को
सम्मान भेंट
रामनारायण शर्मा
-13/10/02

महाकवि ईसुरी

(महाकवि ईसुरी चरित बुन्देली काव्य)

डॉ. राम नारायण शर्मा

बुन्देली साहित्य

महाकवि ईसुरी

(बुन्देली प्रबन्ध काव्य)

डॉ. राम नारायण शर्मा
६९५/३, सिविल लाइन्स, झांसी (उ.प्र.)

प्रकाशन वर्ष	-	सं. २००६१ वि.
	-	सन् २००५ ई.
प्रकाशक	-	डॉ. सुशीला शर्मा रामायण ६९५/३, सिविल लाइन्स, झांसी
दूरभाष	-	२४४२०२६
मूल्य	-	७५ रूपये मात्र
मुद्रक	-	वीर बुन्देलखण्ड प्रेस गुसाईंपुरा, झांसी
दूरभाष	-	२४४०९३१

MAHAKAVI ISURI - BUNDELI KAVYA
Dr. Ram Narain Sharma

सम्वर्द्धन क्रम

			पृष्ठ
१-	निवेदन		IV
२-	महाकवि का व्यक्तित्व व कृतित्व		VI
३-	भूमिका		XIV
४-	दो शब्द		XXI
५-	मूल काव्य		
	अध्याय- १	वंदना और जन्म	1
	अध्याय- २	शैशव	13
	अध्याय- ३	बचपन	24
	अध्याय- ४	किशोरावस्था	36
	अध्याय- ५	युवावस्था	42
	अध्याय- ६	प्रवास	53
	अध्याय- ७	तीर्थाटन	64
	अध्याय- ८	देशाटन	70
	अध्याय- ९	कर्मक्षेत्र	74
	अध्याय- १०	प्रयाण	83
	अध्याय- ११	उपसंहार	88

प्रकाशकीय

महाकवि ईसुरी बुन्देलखण्ड के ही नहीं वरन् बृहद्जन-मानस के कवि और जन-नायक हैं। श्रृंगार काव्य के श्रेष्ठ रचनाकार होने के साथ ही ईसुरी ने जन-मन-गण के अद्भुत गीतों की संरचना की है जिसमें, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शिक्षात्मक दृष्टि के साहित्य को तत्कालीन व्यवस्थाओं व परिस्थितियों के अनुरूप लिखा है। ऐसे व्यक्तित्व के कवि के विराट कृतित्व को अनेकानेक विद्वानों ने संकलित कर अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन किया है। ईसुरी चरित्र पर कतिपय 'औपन्यासिक' रचनाएँ भी प्रणीत हुई। किन्तु उनके समग्र जीवन चिन्तन का काव्य-रूप में प्रस्तुतिकरण अभी तक नहीं हुआ था। इसी उद्देश्य को सामने रख कर डॉ. रामनारायण शर्मा ने बुन्देली भाषा में 'महाकवि ईसुरी' की रचना कर कवि की भाषा में उन्हीं की वाणी को मुखरित करने का भगीरथ प्रयास किया है।

डॉ. शर्मा ने अपने 'निवेदन' में स्पष्ट किया है कि 'महाकवि ईसुरी' कृति के लेखन का निहितार्थ ईसुरी के साहित्य वैभव, उनके विराट स्वरूप को 'लोक-गायक' की गायकी से बाहर निकाल कर उन्हें समग्ररूप में महाकवि की पहिचान कराना है। लोक-कवि या लोक-महाकवि की परिधि से ईसुरी को सीधे कवि अथवा महाकवि कहने से संकोच कर रहे विद्वानों से अनुरोध है कि प्रारम्भ में कबीर-सूर जैसे कवि भी लोक-रंजक माने गये किन्तु विद्वानों ने उनके साहित्य को उचित शोध से जो स्वरूप दिया उससे ये महाकवि के रूप में साहित्य जगत में प्रतिष्ठापित हैं। यद्यपि ईसुरी पर भी अनेक शोध ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। इनके साहित्य को विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जाता है। किन्तु अभी बहुत कुछ करना शेष है।

महाकवि ईसुरी प्रबन्ध काव्य के रचयिता ने उन्हें शिक्षित रचनाकार सप्रमाण प्रमाणित किया है। अतः लोक (मुखरित या लिखित) की छाप से ऊपर ईसुरी को महाकवि कहना उनके साहित्य के सानुरूप होगा।

महाकवि-ईसुरी कृति की भूमिका लेखन से डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया तथा डॉ. मोहनलाल गुप्त चातक द्वारा लिखित 'दो शब्द' के लिये आभार प्रदर्शित करना मेरा कर्त्तव्य है।

आशा है डॉ. रामनारायण शर्मा की यह कृति 'महाकवि ईसुरी' अपने उद्देश्यों को पाठकों में जागृत करने में सफल होगी। मैं डॉ. शर्मा को इस एकल प्रयास हेतु 'बुन्देली साहित्य समिति' झाँसी की ओर से बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि वह इसी प्रकार भविष्य में भी नये साहित्यिक प्रयोगों से साहित्य के भण्डार की श्री समृद्धि में अपना योग दान करते रहेंगे। उनकी दीर्घायु की कामना के साथ।

डॉ. सुशीला
६९५/३, सिविल लाइन्स, झांसी